आपातकाल में सृजन फुलवारी

राजीव रंजन शुक्ल

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

राजीव रंजन शुक्ल

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-153-4

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020, राजीव रंजन शुक्ल

मूल्य - 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY RAJEEV RANJAN SHUKL

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	रिश्ता	6
2.	मन	7
3.	नयन	8
4.	यह रिश्ता क्या कहलाता है	9
5.	शब्द	10
6.	आशा	11
7.	मैं और हम	12
8.	पानी	13
9.	करुणा	14
10.	मदिरा ही महान है	15
11.	मतलब की चादर	16
12.	लगन	17
13.	विलोम शब्द	18
14.	वसुधैव कुटुम्बकम	19
15.	उजाला	20
16.	चलो हम एक शुभ दीप जलाएँ	21

रिश्ता

रिश्ते
जो बिना किसी अपेक्षा के हैं जीते
न होता उन्हे निभाने का बोझ

क्योकि होती नहीं उसमे स्वार्थ की सोच
रिश्ते होते है यह बेशर्त

न झूठे वादे और न होती अपेक्षा
नहीं कोई करता एक दूसरे की उपेक्षा

समय ले कितनी भी परिक्षा
रिश्ता नहीं यह सकता टूट

चाहें डाले कोई कितना भी फूट
रिश्ते होते है ये बेनाम

पर नहीं होते यह बेकाम
रिश्ता नहीं यह सकता टूट

मन

टुकड़ों में बँटा मन
चल रहा था जीवन अपना
देख रहे थे हम सपना
आगे तो है यह करना
नहीं कठिन अब डगर अपना
एक दिन पैगाम आया
छोड़ कर घर दूर आया
पत्नी बच्चा और माँ पिता
छोड़कर है मन रोता
क्या है जीवन बिन परिवार
काटने दौड़ता शनिवार और रविवार
जिसका रहता था इंतजार
अब लगता नहीं आए यह दिन
मन तड़पता जैसे मछली जल बिन
रात दिन लगे सूने सूने
मन नहीं कुछ और सुने
टुकड़ों में है मन बँटा
मन से कुछ नहीं हटा
मन मे भावों का है बाढ़ बना
मन कुछ और सोचने से कर रहा मना
मन है टुकड़ों में बँटा
मन है टुकड़ों में बँटा॥

नयन

दो नयन अबोले
बिन बोले सब बोले

बिन बोले सबको तौले
नयन है भरमाती भी

सर्वप्रथम यही अपनाती भी
धोखे को पहचानती भी

धोखे को कर पहचान
पढ़ लेती अपना मान अपमान

नयनें करती यदि इंतजार
तो करती है यही दुत्कार

माध्यम है मन का नयन
कर सकती अच्छे और बुरे का चयन

दो नयन अबोले
बिन बोले सब बोले॥

यह रिश्ता क्या कहलाता है

यह रिश्ता क्या कहलाता है
है नही कोई पारिवारिक रिश्ता
और न ही कोई नाता
पर क्यो है
यह रिश्ता भाता
मन स्नेह से हमेशा खिचता जाता
जिन्हे खोने का डर सताता
दूर होकर भी लगता अपने पास
कैसे नहीं कहे हम उन्हे खास
यह रिश्ता क्या है कहलाता
शायद कोई इसे बता पाता
दूर कोई कही बैठे जब
प्रेरित करे जब तब
होगा अवश्य कोई अबूझ रिश्ता
पता नहीं
क्या कहलाता है यह रिश्ता
आप बताए क्या है रिश्ता
क्या है कोई फरिश्ता॥

शब्द

शब्द बहुत कुछ कह भी जाते
शब्द बहुत कुछ कर भी जाते
शब्द ही हमे निःशब्द करते
शब्द ही हमे सशक्त करते
शब्दों मे होती है धार
क्रांति की है सूत्रधार
सब है शब्दों की माया
कविता है शब्दों की काया
ग्रंथ,किताब, हो या गाना
शब्द से ही प्रकट होती भावना
शब्द से ही हो जाती है अवमानना
शब्द से हार है शब्द से ही जीत
शब्द प्रकट कर बन जाते हम मनमीत
शब्द से ही दुश्मन बनते अगणित
इसलिए मनोदशा को शब्द से न मिलाए
बाद मे जिससे हम न पछताए
मनोदशा तो फिर बदल सकती
निकले कटुशब्द केवल पछतावा देती
शब्द बहुत कुछ कर भी जाते
शब्द बहुत कुछ कह भी जाते॥

आशा

मैं
शारीरिक, नैतिक और सामाजिक दुर्दशा
पर सिर्फ हँसते रोते निकलता सार्थक वक्त
दूसरों के दर्द और हाहाकार पर
जब नहीं हो संवेदना व्यक्त
वक्त जब कार्य और विचार का आता
नेतृत्व जब शुतुरमुर्ग सदृश सिर छुपाता
समाज जब सुविधा से मूल्य तौलता
नफ़रत, स्वार्थ, क्रूर-हिंसा की बढ़ती भीषण आँधी
बोलो कहाँ कौन बनेगा युग का गांधी
उदास चेहरों पर लाना मुस्कान, नहीं होता है आसान
ऐसे चाहने वालों का हर पग सामर्थ्य परखता है
गलत को गलत कहना जब हो कठिन
अप्रिय अतीत से भयभीत भविष्य
डराता है स्वयं को जब प्रतिदिन
लाएगा कौन उजाला, कौन पिएगा विष का प्याला?
दूसरों का है दायित्व
आम को समझा जब नेतृत्व खिसकता
आत्मकेंद्रित विचार का जब उदासीन समाज पनपता
केवल ईश्वर पर ही आश्रित पौरुष जब रोता
गरीब,पीड़ित,असहाय अस्मिता और सत्य है तब सिसकता
स्व-परिधि मे सीमित समाज
गांधी, सुकरात और सिद्धार्थ को जन्म नहीं लेने दे रहा आज
बढ़ रही, बह रही, नफ़रत, स्वार्थ, क्रूर-हिंसा की आँधी
पर आएगा अवश्य एक दिन
समाज बनेगा नफ़रत, स्वार्थ, और हिंसा बिन
घने निराशाओं की रात
आएंगे सुकरात पीने विष का प्याला
आएंगे फिर कोई दधीचि
समाज के लिए अपनी हड्डी गलाने वाला॥

मैं और हम

मैं, की हम
कौन है अहम
हम नहीं मैं हूँ अहम
दूर करो जल्द यह वहम
मैं में झलकता है अभिमान
हम से ही बनता स्वाभिमान
मैं का है बहुत ही सीमित संसार
हम से ही होता जगमग संसार
मैं दिखाता है रिश्तों मे भी एक फासला
हम है तो दिखता है विपत्ति मे भी एक आसरा
अपना तो रहा है वसुधैव कुटुंकम का संस्कार
मैं से लगता है दूसरों का तिरस्कार
मैं नहीं हम को पहचानों
उसमे छिपे अहम को जानो
रावण, दुर्योधन और कंस में था मैं का अंश
लंका, कौरव और मथुरा ने झेला इसका दंश
हम से ही चलता संसार
मैं से होता बंटाढार,
हम नहीं मैं हूँ अहम
दूर करो जल्द यह वहम
मैं नहीं हम है अहम
मैं है अकेला, हम मे ही है दम।

पानी

पहाड़ी क्षेत्रों मे पानी
कैसी है विडम्बना
वर्षा घनघोर होता पहाड़ों में
फिर भी
पानी के लिए रहता होड़ पहाड़ों में
पानी का महत्व यदि है जानना
पहाड़ों में अवश्य जाना
पानी के लिए यहाँ प्रतिदिन होता लड़ना
इन क्षेत्रों की जीवन रेखा झरना
बचा कर इन्हें है रखना
झरना इन क्षेत्रों की जीवन रेखा
इन क्षेत्रों में
इन्हे ही मानव जीवन को बचाते देखा
इन क्षेत्रों मे परिरेखा बांध बनाए
वर्षा जल को बर्बाद होने से बचाए
सोकपिट मे जमा वर्षा जल
भूजल का पुनर्भरण कर सुनहरा करे आपका कल॥

करुणा

है इन्हे करुणा की जरूरत
रोग तो कोई स्वयं लेकर नहीं आता
प्रत्येक व्यक्ति इससे बचना चाहता
पता नहीं यह कब कहाँ से यह आ जाए
कब,किसे रोग से ग्रसित बनाए
मन व्यथित कर जाए
और अपराध बोध से भी ग्रसित कर जाए
फिर
समाज से भी वहिस्कृत कराय
लोगों की निगाहे और फब्तियाँ
जैसे कोई गंभीर अपराध कर दिया
ग्रसित हैं दुख की मूरत
है इन्हे करुणा की जरूरत
शायद कहना यह ठीक रहेगा
इस रोग का पता चला नहीं
रोगी पकड़ा गया
पकड़े तो जाते है अपराधी
आपकी हमारी सहानुभूति के शब्द
करेंगे इस रोग से
इनके दर्द को आधी
है सिर्फ ग्रसित रोग से
मन मत छोटा कीजिये
किसी अपराध बोध से
आप भी है एक योद्धा
मिलती है हिम्मत समाज को आप से
आप की हिम्मत देती है प्रेरणा
लौक डाउन और अनुशासन का कर पालन
दूर करेंगे ये कष्ट भरे छण
ग्रसित हैं दुख की मूरत
है इन्हे करुणा की जरूरत
है इन्हे करुणा की जरूरत

मदिरा ही महान है

गर्मी, वर्षा या हो
दो-तीन किलोमीटर की लाइन
मदिरा योद्धाओं को चाहिए ही वाइन
नहीं चाहिए रोटी,कपड़ा और मकान
सबसे ऊपर है मदिरापन
मदिरा ही है महान
मदिरा ही है जान
महामारी की विभीषिका से भी यह है अंजान
बंद है देवालय और विद्यालय
व्यापार कर रहे केवल मदिरालय वाले
इसका प्रभाव दूर करता सामाजिक अलगाव
भुला देता है कि महामारी देता भी है कोई घाव
प्रवासी मजदूर जब तक पहुचेंगे अपने अपने स्थान
इतने मे ही हो जाएगा करोड़ों का मदिरा पान
आज हर संबंध का अर्थ है अर्थ
मदिरापन नहीं किया तो जीवन है व्यर्थ
भले ही इसका सेवन ला दे हमे किसी भी अवस्था
लेकिन बढ़ाता तो है यह अर्थव्यवस्था
मदिरा ही जान है
मदिरा ही महान है॥

धरा को हरा होना चाहिए

हमारी आँखों से पानी
बहेंगे ही बहेंगे

ज़ख़म को सूखा और
धरा को हरा होना चाहिए

पानी आँख से नहीं
नदियों मे बहना चाहिए

धरा को दिया हमने जख्म,
जख्म हमारे हरे ही रहेंगे

नदियों को सुखाया हमने
हमारी आँखों से पानी

बहेंगे ही बहेंगे।।

मतलब की चादर

चलो मतलब की चादर उठाते है
रिश्तों को धुंधला दिया है
मतलब की चादर ने

चलो मतलब की चादर उठाते है
फिर दिल से दिल मिलाते है

चलो आज उस चादर को हटाये
कुछ कोशिश तुम करो कुछ कोशिश हम करें

क्योकि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती
मतलब की चादर की दीवार नहीं होती

तबीयत से दिल मिलाएंगे तो दिल मिल ही जाएंगे
मतलब की चादर हमे रोक नहीं पाएंगे॥

लगन

लगन करती
लक्ष्य को पाने मे मगन!

दिल में हो लगन
तो सफलता चूमे कदम!

लगन करती कामयाब
मिल जाता है सफलता नायाब!

समस्याओं या नाकामी के बावजूद
लगन से लक्ष्य मे लगे रहने से बनता वजूद!

लगन विश्वास औऱ हिम्मत
बदल देता है किस्मत!

दशरथ मांझी ने किया लगन
पसीनों का कर हवन!

पहाड़ों को किया परास्त
हराया पहाड़ों को अपने हस्त!

दिखाया
कार्य में दृढ़ता और लगन
लक्ष्य को करता सुगम!

विलोम शब्द

विलोम रखते विपरीत अर्थ
लेकिन क्या है
एक के बिना दूसरे का कोई अर्थ

जड़-चेतन, धरती-गगन
बिन वात-निर्वात
अनल बुझाता है पवन
वर्षा करे सूखा कम

अपेक्षा, उपेक्षा है बढ़ाती
उपेक्षा से जब होता मन मलिन
मन हो जाता अलीन
अपेक्षा पूरी होने की आश

नहीं रहने देती मन को निराश
लेता आनंद वही सुख का
किया जिसने सामना है दुख का
भय की अंतिम सीमा

निर्भय बनाती अपनी सीना
कृष्ण पक्ष के बाद ही पक्ष शुक्ल आती
विलोमता ही पूर्णता लाती
जीवन की चाह ही
मृत्यु से लड़ना सिखाती॥

वसुधैव कुटुंबकम्

कैसी है विवशता पूरा विश्व है रोता
एक वाइरस खत्म किया सम्पूर्ण विश्व के जीवन का रस
क्या इटली, फ्रांस, अमेरिका और क्या चीन
बन गए सभी दीन-हीन।

हालत ऐसी कभी नहीं देखी
अपनों को अपनों से ही मुँह मोडनी पड़ी
सामूहिकता कभी ऐसे नकारा नहीं गया
एकांत मे रहना कभी ऐसे सराहा नहीं गया

वाइरस ने पढ़ाया है ऐसा पाठ
नहीं रहना है अभी एक साथ
साथ तो तभी होगा
जीवन जब अपना होगा
करोना की विवशता से पुनः सीखते हम
वसुधैव कुटुंबकम्

इसलिए अभी का है मूलमंत्र
मैं स्वस्थ तो जग रहेगा
इस वाइरस से स्वतंत्र
इसीलिए अभी एकांत मे रहे हम
वसुधैव कुटुंबकम्॥

चलो एक शुभदीप जलाए

चलो एक शुभदीप जलाए
दीपों की पंक्ति बनाए

भय के अंधेरा को कर दूर
आशा की उजाला लाए हम भरपूर

सूक्ष्म जीव जनित भय का अंधकार
हमारी सावधानी और सहयोग को नहीं लेने देगा उसे आकार

गीत प्रेम के गाए सभी नर नारी
निराशा नहीं हो इन पर भारी

विश्व मे हो हर्ष और शांति
प्रकाश मिटाये अकेले होने की भ्रांति

आत्मविश्वास देता है प्रकाश
कर दूर अंधेरा लाता नयी आस

चलो एक शुभदीप जलाए
दीपों की पंक्ति बनाए॥

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

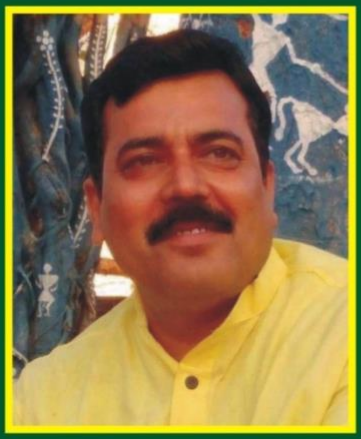

रचनाकार

राजीव रंजन शुक्ल

4B, जानकी कुटीर, अंबेडकरपथ,
रुकुनपुरा, पटना-१४ (बिहार)

Email- rrshukla1973@gmail.com

Mobile - 9608589184

आज एक अदृश्य अतिसूक्ष्म जीव मानवता को प्रतिदिन भयभीत कर रहा है, प्रतिदिन इसके अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगाने का प्रयास कर रहा है। समस्त विश्व आज एक आपातकाल की स्थिति मे है। इस नकारात्मक वातावरण मे सृजन एक सकारात्मकता की बोध कराता है। अंतरा शब्द शक्ति भय के इस तम मे एक उजाला लाने का रचनात्मक प्रयास कर रहा है।

सृजन शब्द से ही बोध होता है एक प्रक्रिया है, बनाने की प्रक्रिया। साहित्यिक सृजन का माध्यम शब्द है और सामाग्री है संवेदना। अनुभूति, विवेक और कल्पना सृजन का आधार है तथा दूरगामी परिणाम वाले मूल्यों की स्थापना इसका उद्देश्य। अंतरा शब्द शक्ति हमारी रचनात्मकता और सृजनात्मकता को एक धरातल प्रदान कर रही है। अंतरा शब्द शक्ति के इस प्रसंशनीय एवं सराहनीय प्रयास का सहृदय आभार प्रकट करता हूँ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-153-4

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/